International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 7 Issue 4, July-August 2023 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

भारतीय समाज व संस्कृति में परिवार का योगदान

डॉ. सुदेश

सहायक प्रवक्ता इतिहास, महिला महाविद्यालय, झोझू कलां

शोध सार

भारतीय इतिहास का विषय बहुआयामी रहा है। जिसमें संस्कृति, साहित्य, समाज, अर्थव्यवस्था, प्रशासन, राजनीति व संस्कृति आदि विषय अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। जिनमें से समाज की पृष्ठभूमि में परिवार का अस्तित्व बहुत ही खास अहमियत रखता है। प्राचीन भारतीय समाज में परिवार मुख्य रूप से संयुक्त होते थे, जो शिशु के विकास के लिए अत्यंत लाभदायक साबित होते थे। परंतु धीरे-धीरे परिवारों की पृष्ठभूमि एकल होती गई। समाज में जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था व शिक्षा हावी होती गई। परिवार भी संयुक्त से एकल में तब्दील हो गए। ऐसा होने से सबसे ज्यादा प्रभाव बच्चों पर पड़ा। जिसमें बच्चे बहुत सारे रिश्तों से अनजान व अनभिज्ञ रहने लगे। एकल परिवार में रिश्तों की डोर छोटी होती गई। बाल्यावस्था में नैतिक शिक्षा बच्चों को उनके परिवार के सदस्यों से ही मिल जाया करती थी, जो आज शैक्षणिक संस्थानों में भी नहीं मिल रही। परिवार के बुजुर्ग सदस्य जो आज स्वयं कि देखभाल के लिए वृद्धाश्रम में पहुंचा दिए गए हैं और साथ-साथ बच्चों को छोटी अवस्था में क्रैच, बाल भवन या प्ले स्कूल आदि में भेज कर उनके बचपन को छीना जा रहा है। परिवार बच्चों कि प्रथम पाठशाला भी कहीं जा सकती है। जहां जाने-अंजाने में वह बहुत कुछ सहज भाव से सीख जाता है। सीखने कि इस प्रक्रिया से बच्चे के बाल मन पर किसी प्रकार का बोझ भी नहीं महसूस होता क्योंकि यह सिखने कि एक सहज प्रवृत्ति है। वर्तमान भारतीय संस्कृति में परिवार के टूटने से समाज में व्याप्त बुराईयां हावी हो गई है। जिनका इलाज संयुक्त परिवार में छुपा हुआ है। अतः भारतीय इतिहास में परिवार का अपना एक खास महत्व व योगदान रहा है। प्राचीन भारतीय इतिहास में हम परिवार के इतिहास का अध्ययन करके इस व्यवस्था को भली-भांति समझ सकते हैं।

How to cite this paper: Dr. Sudesh "Contribution of Family in Indian Society and Culture" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-7 | Issue-4, August 2023, pp.598-599, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd59756.pdf

IJTSRD59756

Copyright © 2023 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

मुख्य शब्द *– भारतीय परंपरा, परिवार, संस्कृति, संस्कार, नैतिक मूल्य आदि।*

उद्देश्य

1. भारतीय परंपरा को जानना।
2. परिवार के मूल्यों को समझना।
3. बुर्जगों के द्वारा प्रदान किए गए नैतिक मूल्यों को समझना।
4. बच्चों में सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देना।

भूमिका - मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज का प्रथम स्तर परिवार होता है। परिवार को पर्यायवाची रूपों में कई तरह से पहचान सकते हैं। परिवार व कुटुंब शब्द का अर्थ गृहस्थी, परिवार, वंश, विवाह के उपरांत विभिन्न रिश्ते एवं संबंध, बाल-बच्चे, संतान आदि जो सभी एक साथ मिलकर रहते हैं।[1] परिवार एक कुटुंब के सदस्यों को कहते हैं जो एक साथ रहते हैं अथवा एक ही व्यक्ति की संतति को परिवार कहते हैं। लैटिन शब्द के 'Family' जो Famulus शब्द से बना है।[2] जिसके अंतर्गत माता-पिता, भाई-बहन, बच्चे, नौकर इत्यादि का समूह आता है। विद्वानों ने अलग-अलग समय पर अलग-अलग व्यवस्थाओं का अध्ययन करते हुए परिवार जैसी सामाजिक व्यवस्था का वर्णन किया है। अर्थात परिवार उन व्यक्तियों का एक समूह है जो विवाह, रक्त या गोद लेने के संबंधों से जुड़े होते हैं। यह एक गृहस्थी का निर्माण करता है, और पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र-पुत्री तथा भाई-बहन अपने-अपने सामाजिक कार्यों से एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं; परस्पर व्यवहार एवं संबंध रखते हैं।

परिवार का महत्व:

परिवार मानव जाति के आत्मसंरक्षण और जातिय जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने का प्रधान साधन है। मनुष्य मरणधर्मा है, किंतु मानव जाति अमर है। व्यक्ति उत्पन्न होते हैं, बचपन, यौवन और बुढ़ापे की अवस्था भोग कर समाप्त हो जाते हैं। परंतु वंश परंपरा द्वारा उनका संतानक्रम लगातार चलता रहता है। मृत्यु और अमृता दो विरोधी वस्तुएं हैं। किंतु परिवार द्वारा इन दोनों का समन्वय बना रहता है। व्यक्ति भले ही मर जाए परंतु परिवार और विवाह द्वारा मानव अमर रहता है।[3]

यद्यपि समाज शास्त्रियों ने अनेक प्रकार के परिवारों का चित्रण अपने-अपने ग्रंथों में किया है तथापि उपर्युक्त परिभाषाओं को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि परिवार के दो स्वरूप समाज में देखने को मिलते हैं। एक स्वरुप में विघटित परिवार- जिसमें पति-पत्नी एवं उनके अविवाहित बच्चे रहते हैं। दूसरे स्वरूप में संयुक्त परिवार - जिसमें पति-पत्नी उनकी संतति के अतिरिक्त, उनके पहले की पीढ़ी के लोग, संबंधी, सभी मिल-जुल कर रहते हैं। परिवार का पहला स्वरूप भारतीय समाज में पाश्चात्य सभ्यता कि देन है। परिवार रूपी संस्था पर पश्चिमीकरण का प्रभाव निम्न लिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:-

पहला प्रभाव पाश्चात्य विचारधारा के अनुसार व्यक्तिवादी भावनाओं से प्रेरित होते हुए एकल परिवार को बढ़ावा देते थे।

जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता को अत्यधिक स्वीकृत किया जाता है। दूसरे प्रभाव के तहत परिवार का स्थायित्व जिसमें स्त्री एवं पुरुष दोनों के कार्यस्थल के क्षेत्र से उनके जीवन का क्षेत्र बंट जाता है। जिसमें व्यक्तित्व एवं उसकी स्वतंत्रता की भावना का बढ़ जाना, जो विवाह-विच्छेद का कारण भी बनता है। जिसके कारण संयुक्त परिवार या यह कहें कि परिवार का स्थायित्व ही कम होने लगा। तीसरा प्रभाव परिवार का छोटा होना, जिसमें आगे चलकर बच्चों की संख्या भी कम होने लगी क्योंकि एकल परिवार में बच्चों के पालन-पोषण पर भयंकर असर दिखाई देने लगा।[5] इस प्रकार देख सकते हैं कि विवाह और परिवार नामक संस्था पर पश्चिमीकरण का वर्तमान में ज्यादा असर दिखाई दे रहा है। जिससे संयुक्त परिवार विघटित होते गए और एकल परिवार बढ़ते गए। जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता की भावना, स्वार्थ, फैशन आदि पर ज्यादा जोर दिखाई देता है। इसका प्रभाव युवक -युवतियों पर यह भी पड़ा कि वे बड़ों के नियन्त्रण में रहना मूर्खता माने लगे। आज की युवतियां सास-ससुर कि सेवा करना व्यर्थ समझते हैं। परिणामस्वरूप वे अपने स्वार्थ के लिए संयुक्त परिवार को तिलांजलि देते चले गए।[6]

इसके अलावा औद्योगिकरण एवं नगरीकरण के कारण सामाजिक गतिशीलता भी संयुक्त परिवार के विघटन का महत्वपूर्ण कारण बनी। परिवार की संस्था पर समीकरण का प्रभाव पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण भारतीय स्त्रियां भी पाश्चात्य जगत की स्त्रियों की भांति नौकरी करने लगी। दोनों दाम्पत्य के नौकरी करने से उनके जीवनक्षेत्र का बंटना प्रारंभ हो गया। इससे पति-पत्नी में भी स्वतंत्रता की भावना बढ़ने लग गई। इसी प्रकार आगे चलकर उनमें बच्चों के प्रति मोह-ममता भी कम हो गई। परिणामस्वरूप भारत में धीरे-धीरे संयुक्त परिवार का स्वरूप एकल परिवार में परिवर्तित होने लग गया। जिससे परिवार का आकार छोटा होने लग गया विवाह का आधार परिवर्तन होने के कारण परिवार में बच्चों की संख्या भी कम होने लग गई। समय के साथ-साथ भारत में भी गर्भनिरोधक के तरीके अपनाने के प्रति जागरूकता भी बढ़ गई। इन सभी कारणों से परिवार का आकार छोटा तो हो गया। लेकिन साथ-साथ बहुत सारी ऐसी सामाजिक बुराइयां भी साथ में आ गई। जिससे बच्चों का मानसिक संतुलन जिसमें खासकर नैतिक मूल्य की कमी दिखने लग गई। इसके अतिरिक्त घर के बुजुर्गों की देखभाल के लिए अनाथालय और वृद्धाश्रम का सहारा लिया जाने लग गया।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार का प्रचलन रहा। जिसमें शिशु को विभिन्न रिश्तों के माध्यम से नैतिक शिक्षा मिलती रहती और भारतीय समाज का एक परिपूर्ण स्वरूप निखर कर सामने आता। परंतु समय के साथ-साथ परिवार का यह स्वरूप भी विघटित होता गया और संकीर्ण व्यवस्था में यह एकल बन गया। दूसरे शब्दों में व्यक्तित्व की रचना तथा उसका समाजीकरण, परिवार द्वारा होता है। वे परिवार जो नैतिक दृष्टि से स्वस्थ हैं, ऐसे परिवारों के प्रशिक्षित व्यक्ति संस्कारित तो होते ही हैं। साथ-साथ इनके सोचने-विचारने और व्यवहार करने का तरीका सुंदर एवं प्रभावशाली होता है। ठीक इसके विपरीत वे परिवार हैं जो निर्धन और दरिद्र हैं। ऐसे परिवारों में जन्म से ही बालक अपने चारों ओर समाज विरोधी कार्यों को करते हुए देखता है। इन टूटे हुए अनैतिक परिवारों में तस्करी, जूआ, शराब, चोरी, भ्रष्टाचार, अनैतिक यौन- संबंध, वेश्यावृत्ति जैसी कुरुतियां इनके जीवन का अंग बन जाती है।[7]

संयुक्त परिवार का विघटन[8]

आधुनिक संयुक्त परिवार प्रणाली का अंत होता जा रहा है। अतः सभी लोग इसके लाभों से वंचित होते जा रहे हैं। इसका सबसे ज्यादा असर बच्चों की परवरिश और शिक्षा पर पढ़ रहा है। इस कारण बच्चे दिन-प्रतिदिन बिगड़ते जा रहे हैं। पहले परिवार में माता-पिता तथा अन्य संबंधी बालक को संस्कृति के विभिन्न आयाम जैसे रीति-रिवाज, परंपराएं, मुल्य, विश्वास आदि की शिक्षा देते थे। परिवार में उन्हें पहले उचित-अनुचित में अंतर करना सिखाया जाता था और उनको सुसंस्कृत बनाया जाता था। परिवार में ही उन्हें शिष्टाचार सिखाया जाता था। परिवार के अन्य सदस्यों की देखा-देखी वह अपने से छोटे-बड़े और बराबर के व्यक्तियों से व्यवहार करने की आदतें उनमें एक दूसरे को देखते हुए बचपन में ही आ जाती थी।

सामाजिक चुनौतियां –

1. आधुनिकता के साथ परिवार का मेल कमजोर पड़ना।
2. आर्थिक व्यवस्था को दुरुस्त करने के कारण परिवार का टूटना।
3. नैतिक शिक्षा व मूल्यों कि कमी के कारण परिवार कि अहमियत न समझना।

निष्कर्ष : इस प्रकार हम अध्ययन के माध्यम से यह पता लगा सकते हैं कि परिवार भारतीय सामाजिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण बिंदु है। जिससे नई पीढ़ी को बिना किसी खास मेहनत के शिष्टाचार, नैतिक मूल्य, संस्कृति के विभिन्न आयाम आदि सभी शिक्षाएं अपने परिवार के सदस्यों से आसानी से मिल जाती है। लेकिन आधुनिक व्यवस्थाओं के मध्य नजर परिवार भी संयुक्त से एकल में तब्दील होते चले गए और सामाजिक व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण कड़ी धीरे-धीरे जर्जर होकर खत्म होने लगी। जिसका सबसे ज्यादा प्रभाव शैशव काल और वृद्धावस्था पर पड़ता नजर आ रहा है। जिसको समय रहते अगर नहीं संभाला गया तो आने वाले समय में और ज्यादा नकारात्मक असर समाज में देखने को मिलेगा और धीरे-धीरे भारतीय समाज भी विदेशों की तर्ज पर एकांकी और मूल्यहीन होता चला जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ-

[1] वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत- हिंदी-शब्दकोश, पृष्ठ संख्या 281, 287, 589.

[2] डॉ राजकुमार(2014) भारतीय समाज एवं संस्कृति, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज-दिल्ली, पेज नं-129.

[3] हिन्दू परिवार मीमांसा, पृ. 47.

[4] डॉ गोविंद प्रसाद (2007) आधुनिक समाज की समस्याएं, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, पेज नं- 8.

[5] डॉ गोविंद प्रसाद (2007) 'सामाजिक परिवर्तन' डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली- 110002, पेज नं-29

[6] डॉ गोविंद प्रसाद (2012) आधुनिक समाज की समस्याएं, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस दिल्ली -110002,पेज नं 246-47.

[7] वहीं, पेज नं – 8

[8] दक्षता गुप्ता (2007) भारतीय समाज और शिक्षा, वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली – 110002, पेज नं 53.